

डॉ .सुश्री संगीता स्वाईं

ओड़िशा

अधूरी ख्वाईश

मैं सरिता श्रीवास्तव indian Navy के ex-admiral सौरभ श्रीवास्तव की पत्नी, अविका और आरव की माँ आज अपना जन्म दिन मना रही हूँ. पिछले तीस साल से सौरभ की गृहस्थी संभाल ने में अपने आपको इतना ब्यस्त रख्खी के आपने बारे में सोच ने का मौका ही नहीं मिला. सौरभ को शिप से बहुत प्यार है, एनिवर्सरी हो या जन्म दिन सौरभ को शिप पर ही मनाना पसंद है. उनका कहना है गहरे नीले समंदर के बीच जहाज में cake काटना सेलिब्रेट करने का मज़ा ही अलग है. समंदर और जहाज को अपना दूसरा परिवार मानते हैँ सौरभ| मुझे सादगी पसंद हे मगर सौरभ को दिख्रावा पसंद है. मेरी पसंद ना पसंद कुछ ज्यादा मायने नहीं रख्रती उनके लिए. वैसे भी औरत हूँ तो अपने अरमानों का हर दिन मुख्रअग्नि देती रहती हूँ. ऐसा नहीं कि पति या पिता के रूप में सौरभ ने अपने फर्ज़ निभाने में कोई कसर बाकी रख्री है. उनसे कोई शिकायत भी नहीं मुझको पर पता नहीं ऐसा कौन सा ख्रालीपन है मेरे भीतर जो इतने साल की शादी शुदा जीवन में भर नहीं पाया.

हस्ते ख्रेलते परिवार की ज़िम्मेदारियां निभाने के बीच अनूप की याद को भुला नहीं पाई. अनूप मेरा पहला प्यार.... इस से पहले कुछ और सोच पाती किसी की आवाज़ से में सचेत हुई

मैडम आपके लिए पार्सल आया है. मुझे कौन पार्सल भेजेगा? कौतुहल से पार्सल ख्रोलते ही उसके भीतर एक डिब्बा निकला. नीचे एक कागज़ फोल्ड हुआ मिला. डिब्बे को ख्रोलते ही उस में से एक घड़ी निकली. काफी पुरानी लग रहा थी. फिर कागज़ को ख्रोलकर पहली लाइन पढ़ी

प्रिय सुरु,

सुरु... इस नाम से तो मुझे बुलाने वाला सिर्फ एक ही इंसान था वह था अनूप. तो क्या ये अनूप ने लिख्रा है? मैं आगे पढ़ती गयी. सुरु मैं अनूप.....?

कैसे हो? सोच रहे हो ना मोबाईल के युग में तुमको ये हाथ से लिख्रा हुआ ख़त क्यों भेजा. मैं देख्रना चाहता था तुमको मेरी hand writing याद है या नहीं. और ये घड़ी याद है?

स्कूल के फेयरवेल में तुमने मुझे गिफ्ट की थी अपने पॉकेट मनी से सेविंग कर के. बोला था ये घड़ी हमारे साथ बिताये हुए लम्हों की निशानी बनकर रहेगा. तब से इतने साल तक इस घड़ी को संभाल कर रख्रा हे. याद है ना वह स्कूल के पास नीम का पेड़ उसके नीचे तुम और मैं घंटो बैठकर बातें किया करते रहते थे. कितना सुहाना समय था. फिर तुम्हारे पिता जी का ट्रांसफर हो गया और तुम वह शहर छोड़ दी. आख्ररी बार हम उस नीम के पेड़ के नीचे मिले ख्रूब रोये. उसके बाद हम कभी नहीं मिले. तुम अपनी दुनिया में ब्यस्त रही मैं अपनी दुनिया में.

वक्त बीतता गया उसके साथ मुझे एहसास हुआ हमारा रिस्ता दोस्ती से ऊपर था. उम्र के उस पड़ाव में हम प्यार को नहीं पहचान पाए. तब आज के ज़माने की तरह social media का या मोबाईल का चलन भी नहीं था जो एक दूसरे के contact में रहते. झूठ नहीं बोलूंगा केरियर में stable होने के बाद अपना पहला प्यार, प्यारी सी दोस्त सुरु को तलाश की. पर तब बहुत देर हो चुकी थी.

तुम किसी और के अमानत हो चुकी थी. में जानता था तीसरा इंसान पति पत्नी के रिश्ते में दरार वन जाता है. फिर क्या पता तुम्हारे मन में मुझे लेकर प्रेम की भावना थी भी कि नहीं. यही सब सोच कर मैंने तुमसे दूर होने की कोशिश की पर नाकाम रहा. किसी भी दूसरी लड़की में तुम्हारा अक्स नहीं पाया इसीलिए आज तक शादी नहीं की. मैं अतीत बन कर तुम्हारे वर्तमान में आना नहीं चाहता था पर किस्मत ने फिर मेरे साथ मज़ाक किया. हाल ही में मुझे पता चला मुझे ब्लड कैंसर है, वह भी लास्ट स्टेज... कुछ ही दिनों का मेहमान हूँ. इस दुनिया को अलविदा कहने से पहले एक आखरी बार तुमको देखना चाहता था. क्या एक बार हम उस नीम के पेड़ के नीचे मिल सकते हैं? बहुत कुछ बताना है तुमको. सुना हे मरने वाले की आखरी इच्छा पूरी की जाती है. क्या तुम मेरी यह अंतिम इच्छा पूरी करोगी?



तुम्हारे

इंतज़ार में अनूप

मैं अब तक स्वप्न में थी. ऐसा लग रहा था जैसे अनूप मेरे सामने खड़ा हो कर अपनी आप बीती सुना रहा हो. मैंने अनूप के ख़त के एक एक अक्षर को छुआ. अनायास ही मेरी आँखों से कुछ बूँदों ने गिरकर ख़त को गिला कर दिया. जीवन भर पति और बच्चों की बात मानते हुए उम्र गुज़र दी. आज अपने दिल की आवाज़ सुनूंगी. यही फैसला लेते हुए मैं अनूप से मिलने के लिए बचपन के सहर की तरफ निकल पड़ी. मेरे सामने वही नीम का पेड़ था. उसके निचे सफ़ेद बालों में थकी सी आँखों में बीमारी का दर्द, सुनापन उदासी लिए एक इंसान खड़ा था. मुझे देख कर मुस्कान के पीछे अपने दर्द को छुपाते हुए बोला

सुरु..... बूढा होचुका वह, नीम के पेड़ के पत्तों ने इसरा दिया. दोनों तरफ गहरी ख़ामोशी थी.